भक्ति दर्शन
भक्ति का महासंगम

कृष्ण जन्माष्टमी

माह : सितम्बर
दसवां अंक

प्रकाशन वर्ष 2018
भाषा : हिन्दी

॥ भक्ति दर्शन ॥

भक्ति का महासंगम

कृष्ण जन्माष्टमी - अजा एकादशी - गणेश चतुर्थी - इंद्रेश जी जन्मोत्सव
राधा अष्टमी - अनंत चतुर्दशी - पूर्णिमा श्राद्ध - सितम्बर 2018 मासिक राशिफल

कृष्ण जन्माष्टमी

श्री कृष्ण जन्माष्टमी मुहूर्त :–

2 सितंबर 2018 (रविवार)
अष्टमी तिथि आरंभ : 20:47 (2 सितंबर 2018)
अष्टमी तिथि समाप्त : 19:19 (3 सितंबर 2018)
निशिथ पूजा: 23:57 से 00:43 (अवधि – 0 घंटे 45 मिनट)
पारण : 20:05 (3 सितंबर 2018)
(वैष्णव कृष्ण जन्माष्टमी 03 सितम्बर 2018 को मनाई जायगी)

कृष्ण के जन्म का उत्सव :–

श्री हरी विष्णु के सभी अवतारों में से केवल एक अवतार ऐसा है जो सम्पूर्ण कलाओं से युक्त है, जिसे सारा संसार निर्विरोध पूजता है। उनकी हर निति, हर कला और हर लीला की संसार प्रशंसा करता है, और यह अवतार हैं श्री कृष्ण। उनका जीवन हर प्रकार के रंगों से भरा हुआ है– जहाँ उनका बचपन शरारतों और प्रेम रस की दिव्ताओं से भरा हुआ है वहीँ उनकी युवावस्था युद्ध तथा राजनीती की श्रेष्ठता की मिसाल है। वह किसी एक विचारधारा से बंधें नहीं हैं, उन्हें धर्म के लिए जो कुछ भी उचित लगता है वे निर्भीक होकर उसे करते हैं। वे एक सच्चे मित्र, भक्त वत्सल तथा एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनि हैं।

ऐसे ही बहुमुखी प्रतिभा के धनि श्री कृष्ण के जन्म के दिन को भक्त जन्माष्टमी के रूप में मनाते हैं। इस दिन भक्तजन व्रत रखकर श्री कृष्ण की पूजा अर्चना करते हैं तथा उन्हें पालना में झुलाते हैं।

वृन्दावन की होती है निराली छठा :–

श्री कृष्ण जन्मोत्सव को लोग त्यौहार की तरह मनाते हैं, पौराणिक ग्रंथों के अनुसार श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में हुआ था। उनका जन्म मध्यरात्रि में हुआ था। अतः हर वर्ष भाद्र पद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को लोग कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाते हैं।

इस दिन न केवल भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में हिन्दू धर्म के लोग जन्माष्टमी मनाते हैं। वृन्दावन, मथुरा सहित गुजरात में इस त्यौहार की एक अलग ही छठा होती है। यहां पर इस दिन रासलीला का आयोजन भी किया जाता है जो की पूरे विश्व में प्रसिद्द है।

निकलती हैं झांकियां :–

इस दिन श्रद्धालु श्री कृष्ण की झाकियां भी बनाते हैं, इस दिन पंजीरी का विशेष प्रसाद बनाया जाता है जो की अत्यंत स्वादिष्ट और लाभकारी होता है। कई जगहों पर मटकी फोड़ने का आयोजन किया जाता है। यह क्रिया भगवान श्री कृष्ण के बचपन की माखन चुराने की लीला की ही पुनरावृत्ति है। युवा कई सारी टोलियों में एक मानव मीनार बनाकर उस मटकी को फोड़कर उसके माखन को चुराते हैं। वृन्दावन में विशेष रासलीला का आयोजन होता है, जिसमे राधा कृष्ण और गोपियों का प्रेम नृत्य द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

अजा एकादशी

संघर्ष इंसान को मजबूत बनाता है! फिर चाहे वो कितना भी कमजोर क्यो न हो।

व्रत मुहूर्त :–

6 सितम्बर 2018 (गुरुवार)
एकादशी तिथि प्रारम्भ : 15:00 (5 सितम्बर 2018)
एकादशी तिथि समाप्त : 12:15 (6 सितम्बर 2018)
पारण समय : 06:05 से 08:34 (7 सितम्बर 2018)

जैसा कि हम सभी जानते हैं एकादशी का व्रत अत्यंत पुण्यदायी है। महाराज युधिष्ठिर ने अपने परिवारजनों सहित इन एकादशी के व्रतों को युद्ध में हुए पापों से मुक्ति पाने के लिए किया था। एकादशी के पावन व्रत वर्ष में 24 बार आते हैं किन्तु अधिकमास या मलमास में इनकी संख्या बढ़कर 26 हो जाती है। भाद्रपद के कृष्ण पक्ष में आने वाली एकादशी को अजा एकादशी के नाम से जाना जाता है।

इस दिन व्रती व्रत रखकर भगवान श्री हरी विष्णु की पूजा अर्चना और रात्रि जागरण करता है, जिससे उसके सभी पाप और कष्ट मिट जाते हैं।

अजा एकादशी की महिमा अपरम्पार है, इस व्रत के करने से राजाओं को उनका छिना हुआ राज्य वापस मिल गया और अंत में बैकुंठ धाम में उन्हें स्थान मिला। क्योकि एकादशी के व्रत करने से मनुष्य का चित्त शुद्ध हो जाता है, उसकी बुद्धि ईश्वर में स्थापित होती है, ज्ञान का प्रकाश उसके अंतर्मन को प्रज्वलित करता है। इस वर्ष अजा एकादशी 6 सितम्बर 2018 को मनाई जायगी।

पूजन और व्रत विधि :–

1. जो भी व्यक्ति इस व्रत को करने का इच्छुक है उसे दशमी के दिन से ही इस व्रत के नियमों का पालन करना चाहिए। दशमी के दिन व्यक्ति को सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए।
2. एकादशी के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले उठकर नित्यकर्मों के पश्चात् स्नान करना चाहिए।
3. स्नान के पश्चात् मंदिर की साफ सफाई करके वहां भगवान विष्णु की मूर्ति अथवा चित्र स्थापित करना चाहिए।
4. उनके सामने घी का दीपक प्रज्वलित करें, तत्पश्चात रोली, चंदन, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से उनका पूजन करें।
5. पूजा के पश्चात् विष्णु सहस्त्रनाम का जाप अथवा गीता का पाठ करना उचित रहता है।

6. व्रत वाले दिन व्रती को निराहार ही रहना चाहिए किन्तु जो लोग निराहार नहीं रह सकते वह फलों का सेवन कर सकते हैं।
7. व्रत वाले दिन रात्रि में जागरण कर भगवान विष्णु का ध्यान और भजन करना चाहिए।
8. द्वादशी के दिन ब्राह्मणों को भोजन कराने के पश्चात् स्वयं भोजन ग्रहण करना चाहिए। एकादशी के व्रत के दिन चावल, चने और बैगन जैसी चीजें खाने से बचें।

अजा एकादशी का महत्व :–

अजा एकादशी एक श्रेष्ठ व्रत है, इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य की इन्द्रियां, व्यवहार, मन और चेतना संयमित होती है। यह व्रत मनुष्य को अधर्म और अनीति से उठकर निति और सत्य की राह पर चलने के लिए प्रेरित करता है। और जब मनुष्य के पाप समाप्त होते हैं तब वह बैकुंठ धाम में अपना स्थान बना लेता है। उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है और जीवन मरण के बंधनों से आजादी मिलती है। इस व्रत का प्रभाव अश्वमेघ यज्ञ, तीर्थ स्थान और किसी भी तपस्या से अधिक है। अतः जो मनुष्य ग्रहस्त हैं उन्हें संसार के भव बंधनों से मुक्ति के लिए एकादशी के व्रत अवश्य करने चाहिए।

व्रत कथा :–

सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र जी का नाम हर कोई जानता है। वह बहुत बड़े सत्यवादी थे, उनकी प्रशंसा बड़े बड़े ऋषि करते थे। एक बार तो उन्होंने स्वप्न में दिए वचन के लिए अपना सम्पूर्ण राज पाठ दान दे दिया। जिससे उनकी पत्नी

तथा पुत्र भी बेघर हो गए, उसके बाद उन्होंने आजीविका के लिए एक शमशान घाट पर पहरेदार का कार्य करना शुरू किया और उनकी पत्नी एक रानी की दासी बन गयी। किन्तु नियति को इतने से भी संतोष नहीं हुआ और एक दिन उनके पुत्र को सांप ने डस लिया, जिससे उसकी मौत हो गयी। उनकी पत्नी रोते बिलखते उसको शमशान घाट पर अंतिम संस्कार के लिए ले गयी, किन्तु पहरेदार बने हरिश्चंद्र जी ने उनको अंतिम संस्कार की क्रिया करने से रोक लिया। उन्होंने कहा पहले कर जमा करो तभी तुम अपने पुत्र को यहां दफना सकती हो। उन्होंने पुत्र मोह के आगे अपने कर्तव्य को रखा, और जब उनकी पत्नी ने कर स्वरुप अपने हाथों के कंगन दिए तभी उन्होंने उसे दफनाने के लिए जमीन दी। उनके इस दृढ संकल्प को देखकर ऋषि गौतम ने उन्हें अजा एकादशी का व्रत करने का सुझाव दिया। राजा ने इस व्रत को किया और उस व्रत के प्रभाव से उनको उनका खोया हुआ राज्य प्राप्त हो गया और अंत में परिवार सहित उनको परमधाम की प्राप्ति हुई।

गणेश चतुर्थी

व्रत मुहूर्त :–

13 सितम्बर 2018 (गुरुवार)
मध्याह्न गणेश पूजा समय : 11:03 से 13:30 (2 घंटे 27 मिनट)
चतुर्थी तिथि प्रारम्भ : 16:07 (12 सितम्बर 2018)
चतुर्थी तिथि समाप्त : 14:51 (13 सितम्बर 2018)

गणेश चतुर्थी हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार है, जो कि सम्पूर्ण भारत वर्ष में बड़ी धूम धाम के साथ मनाया जाता है। किन्तु महाराष्ट्र में इस त्यौहार की एक अलग ही छटा है। पुराणों के अनुसार इस दिन गणपति बप्पा का जन्म हुआ था। गणेश चतुर्थी की तैयारियां कई दिन पहले से ही होने लगती हैं, भक्त अपने घरों में गणेश जी की मूर्तियां लाते हैं। कई सोसाइटीज और मोहल्लों में लोग सामूहिक रूप से एक विशाल गणपति की मूर्ति ले आते हैं, जिसकी सभी लोग मिलकर पूजा करते हैं। यह उत्सव कुल १० दिनों तक चलता है, जिसके बाद गाजे बाजे के साथ लोग नाचते झूमते गणपति बप्पा को जल में विसर्जित कर देते हैं। वर्षभर में आने वाली चतुर्थियों में यही चतुर्थी सबसे अधिक बड़ी और महत्वपूर्ण होती है।

प्रतिमा को कैसे लाएं घर? :–

गणेश चतुर्थी से पूर्व गणपति जी की प्रतिमा को घर लाने के लिए कुछ विशेष प्रक्रिया होती है–

– गणपति को कभी भी खुला नहीं लाना चाहिए। उनकी मूरत एक कपडे से ढक कर ही घर में लाई जाती है।
– गणपति घर के अंदर प्रविष्ट कराने से पहले द्वार पर

उनका स्वागत अक्षत, धूप तथा आरती से कीजिये।

– गणेश जी को स्थापित करने के बाद कपडा हटाना चाहिए। जहाँ मूर्ति स्थापित की है वहां पर भी अक्षत बिछाने चाहिए।
– मूर्ति के समक्ष हल्दी, अक्षत, पान, सुपारी आदि भी रखनी चाहिए।

किस प्रकार करें पूजा :–

गणपति जी प्रथम पूज्य देवता हैं। किसी भी शुभ कार्य में सबसे पहले गणेश जी को ही आमंत्रित किया जाता है, वह विघ्नहर्ता हैं। रिद्धि सिद्धि के दाता गणपति जी की पूजा निम्न लिखित प्रकार से करनी चाहिए:

– गणेश जी की मूर्ति स्थापित करने की जगह पर हल्दी में लिपटे हुए चावल रखिये, उसके ऊपर उनकी स्थापना कीजिये।
– गणपति पूजा में भी किसी भी पूजा की तरह कलश स्थापना की जाती है। इसके लिए भूमि पर चावलों से अष्टदल कमल बनाएं। उसके ऊपर कलश रखें, कलश में एक शुद्ध रुपया, सुपारी और कुछ अक्षत डालिये और फिर उसमे शुद्ध जल भर दीजिये। उसमे थोड़ा गंगाजल भी डालिये।
– इसके पश्चात् कलश में पांच पल्लव आम के पत्ते रखिये, और उसके ऊपर रक्षा धागे में बंधे नारियल को रखिये। अब सभी पत्तों को और कलश को तिलक लगाएं।
– अब कलश के निकट मिट्टी की गौरी और सुपारी के गणेश जी की स्थापना कीजिये। दोनों को पान के पत्ते पर स्थापित करें।
– अब घी का दीपक और धूप जलाएं, इसके पश्चात् सभी भगवानों का तिलक करें और साथ में ॐ गं गणपतये नमः का जाप भी करें।

'तिलक के बाद फूल चढ़ाएं और गणपति को दूर्वा घास अर्पित करें। और अंत में गणपति जी की आरती गाते हुए दीपक तथा कपूर से आरती उतारें।

'पूजा समाप्त होने के पश्चात् हाथ में अक्षत और फूल लेकर क्षमा याचना करें।

गणेश विसर्जन :–

गणेश महोत्सव जो कि चतुर्थी के दिन प्रारम्भ होता है, दस दिन बाद चतुर्दशी के दिन समाप्त हो जाता है। यह दिन अनंत चतुर्दशी के लिए भी प्रसिद्द है, और इस दिन भगवान विष्णु के अनंत रूप की उपासना की जाती है। चतुर्दशी के दिन बप्पा को घर से विदा देते हैं, इस समय भी उनका विधिवत पूजन अर्चन किया जाता है। और फिर सभी भक्त मंडली मिल कर गाजे बाजे के साथ नाचते झूमते और गणपति बप्पा के जयकारे, 'गणपति बप्पा मोरया, मंगल मूरति मोरया' तथा 'गणपति बप्पा की जय' करते हुए हुए समुद्र अथवा नदी के तट पर पहुंचते हैं और वहां पर विधिवत गणेश जी को विसर्जित कर देते हैं। मराठा में लोग 'गणपति बप्पा मोरया, पुडचा वर्षी लवकर या' बोलकर गणपति को विदाई देते हैं, जिसका अर्थ है, ''गणपति बप्पा अगले वर्ष जल्दी आना''।

अनंत चतुर्दशी के दिन गणेश विसर्जन का शुभ मुहूर्त :–

सुबह का मुहूर्त (चर, लाभ, अमृत) : 07:43 – 12:13
अपराह्न मुहूर्त (शुभ) : 13:43 – 15:13
सायंकाल मुहूर्त (शुभ, अमृत, चर) = 18:13 – 22:43
रात्रि मुहूर्त (लाभ) : 25:44+ – 27:14+
प्रातःकाल मुहूर्त (शुभ) : 28:44+ – 30:14+
चतुर्दशी तिथि का आरंभ :
23 सितंबर 2018, 05:43 बजे (रविवार)
चतुर्दशी तिथि का समापन :
24 सितंबर 2018, 07:17 बजे (सोमवार)

इंद्रेश जी जन्मोत्सव

इंद्रेश जी के जन्मोत्सव में श्रीनाथजी का अभिषेक :–

वृन्दावन की पावन भूमि पर सदैव ही भागवत कथा, भागवत गीता और अन्य कथाओं का आयोजन होता रहता है। किन्तु इस बार का यह आयोजन कुछ खास था, 8 अगस्त 2018 को बृज में पूज्य गुरु श्री इंद्रेश उपाध्याय जी के पावन जन्मदिन के उपलक्ष्य में श्रीनाथजी मंदिर गोवर्धन, वृन्दावन में ठाकुर जी का अभिषेक आयोजित किया गया। इसमें कई लोगों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया, इंद्रेश जी की माता सहित कई संतों और भक्तों ने ठाकुर जी का अभिषेक किया। यह इंद्रेश जी का 21 वां जन्मदिन था, जिसमे ठाकुर जी का पहले पंचामृत द्वारा एक एक कर अनेकों भक्तों ने अभिषेक किया। तत्पश्चात इंद्रेश जी ने पंचामृत, घी, दूध, दही, शहद, हल्दी आदि से ठाकुर जी का स्नान सम्पन्न किया और अंत में जल द्वारा उनका अभिषेक किया।

अभिषेक के बाद ठाकुर जी का श्रृंगार प्रारम्भ हुआ, जिसमे सर्वप्रथम उनको यज्ञपवीत पहनाया गया उसके बाद उन्हें फूलों का हार पहनाया गया और अंत में पगड़ी और धोती बाँधी गयी। इसके बाद सभी ने सामूहिक रूप से ठाकुर जी की आरती की।

आरती के पश्चात् ठाकुर जी के वस्त्र इंद्रेश जी को आशर्वाद रूप में पहनाये गए, और ठाकुर जी को नवीन कपड़ों में सजाया गया।

जन्मोत्सव की शोभा सुन्दर भजनों से सजाई गयी थी, जिसमे सभी भक्त आनंद के सागर में गोते लगा रहे थे। जन्मोत्सव का मुख्य आकर्षण थे परम पूज्य श्री राजेंद्र दास जी महाराज, उन्होंने अपने अमृत वचनों से भक्तों को और इंद्रेश जी को आशीर्वाद दिया। उन्होंने इंद्रेश जी की प्रशंसा करते हुए कहा, उनका जन्म अलौकिक है और उन्होंने अपनी सेवा गिरिराज को समर्पित करके अपने कुल को और माता पिता सहित हिन्दू समाज को प्रकाशित किया है। इस महोत्सव का प्रसारण आस्था चौनल में 8 अगस्त को दोपहर 1:00 बजे से 1:30 बजे तक किया गया।

राधा अष्टमी

राधाष्टमी भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को मनाई जाती है, और इस वर्ष यह 17 सितंबर 2018 को पड़ेगी। राधा अष्टमी के शुभ अवसर पर उनके जन्मस्थान बरसाने में अत्यंत उत्साह का माहौल रहता है। वहां पर लोग त्यौहार मनाते हैं तथा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन इस उपलक्ष्य में किया जाता है। इस दिन कृष्ण तथा राधा के भजन तथा प्रेम गीत गाये जाते हैं।

राधाष्टमी कथा :–

राधा जी वृषभान की दुलारी थीं, किन्तु एक पौराणिक कथा के अनुसार वह विंध्यांचल पर्वत की पुत्री थीं। एक बार विध्यांचल ऋषि शिव पार्वती के विवाह में गए थे, उनका दिव्य विवाह देखकर उनके मन में भी इच्छा हुई की उनकी भी एक पुत्री होती तो वे उसका विवाह श्री हरी से कराते। इसके लिए उन्होंने ब्रह्मा जी की तपस्या की, उन्होंने उन्हें एक सुन्दर पुत्री का वरदान दे दिया, यही पुत्री राधा थीं। एक बार पूतना राधा जी को उठाकर ले जाने लगी, किन्तु ऋषियों के जप तप के बल से उसकी शक्ति क्षीण होने लगी। और उसने राधा जी को एक स्थान पर छोड़ दिया, वह उस स्थान पर एक कमल के ऊपर गिर गयीं। और उन्हें निःसंतान गोप वृषभान और उनकी पत्नी कीर्ति ने देख लिया और अपने घर ले आये। उन्होंने राधा जी का पालन पोषण अपनी पुत्री की तरह किया, राधा पूर्णतया स्वस्थ थीं और बढ़ रही थीं, किन्तु उन्होंने अपनी आँखें नहीं खोली थीं। ऐसे ही समय निकलता गया

और वृषभान चिंतित होने लगे, तब एक दिन नारद जी ने उन्हें एक उत्सव आयोजित करने का सुझाव दिया। वृषभान ने ऐसा ही किया और गोकुल से नन्द जी को भी बुलाया, नन्द जी बालक कृष्ण को लेकर उत्सव में पधारे। कृष्ण जी ने खेलते खेलते राधा जी की ऊँगली पकड़ ली और उनका स्पर्श होते ही राधा जी ने अपनी आँखे खोल दी। मानो उन्होंने निश्चय किया हो की संसार में सबसे पहले अपने प्रिय का ही दर्शन करेंगी।

राधाजी श्री कृष्ण की प्रेमिका थीं, किन्तु उनका विवाह रायाण नामक व्यक्ति के साथ हुआ था। कृष्ण जी में सारी सृष्टि को मोहित करने की क्षमता थी, और राधा जी में उन कृष्ण जी को मोहित करने की क्षमता थी।

राधा अष्टमी का महत्वः—

भगवान कृष्ण जी पूर्णतया राधा जी को समर्पित थे, वे उन्हें अपने से उच्च स्थान देते हैं। अर्थात यदि राधा जी को प्रसन्न कर लिया तो कृष्ण जी स्वयं प्रसन्न हो जाते हैं। प्रत्येक वर्ष राधा अष्टमी कृष्णजन्माष्टमी के लगभग 15 दिनों बाद आती है। इस दिन राधा जी का प्राकट्य हुआ था, और इस वर्ष यह 17 सितम्बर को मनाई जायगी। जिस प्रकार कृष्ण जन्मोत्सव की धूम पुरे भारत वर्ष में रहती है उसी प्रकार राधाष्टमी भी अतिउत्साह के साथ वृन्दावन, मथुरा और बरसाना में मनाई जाती है। इस्कॉन टेम्पल्स में भी यह श्रद्धा के साथ मनाई जाती है। सभी वैष्णव पंथी, रामा पंथी और कृष्ण पंथी भी राधाष्टमी को व्रत रख कर माँ राधा की पूजा अर्चना करते हैं।

राधाष्टमी पूजन विधिः—

अन्य व्रतों की भांति राधा अष्टमी का व्रत भी पूर्ण श्रद्धा से और विधिवत करना चाहिए। इस दिन प्रातः काल जल्दी उठकर स्नान आदि कर लेना चाहिए और फिर राधा की मूर्ति को भगवान कृष्ण के साथ मंदिर में स्थापित करना चाहिए। दोनों प्रतिमाओं को पंचामृत से स्नान करा कर अंत में शुद्ध जल से स्नान कराएं। तत्पश्चात राधा जी का और कान्हा का श्रृंगार करें। फिर राधा कृष्ण की धूप तथा दीप से आरती कर उन्हें फूल और फल अर्पित करें। इस दिन राधा जी की जन्म की कथा तथा राधा कृष्ण की लीलाएं श्रवण करनी चाहिए।

अनंत चतुर्दशी

23 सितम्बर 2018 (रविवार)
अनंत चतुर्दशी पूजा मुहूर्त : 06:13 से 31:17+
(25 घंटे 4 मिनट)
चतुर्दशी तिथि प्रारम्भ : 05:43 (23 सितम्बर 2018)
चतुर्दशी तिथि समाप्त : 07:17 (24 सितम्बर 2018)

अनंत चतुर्दशी भगवान विष्णु के अनंत रूप की आराधना के लिए मनाई जाती है। प्रभु अनंत हैं, वह कण कण में व्याप्त हैं, और अनंत चतुर्दशी इन्हीं प्रभु की अनंतता का बोध कराती है। यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है और वर्ष में केवल एक ही बार आता है। इस दिन भक्त अनंत भगवान के नाम का रक्षासूत्र हाथ में बांधते हैं, जिसे अनंत सूत्र कहा जाता है। माना जाता है, यह अनंत सूत्र भक्तों की विपत्ति में रक्षा करता है, तथा भक्तो की सारी परेशानियां दूर कर देता है।

अनंत चतुर्दशी का महत्व :—

अनंत चतुर्दशी के व्रत का महत्व श्री कृष्ण द्वारा युधिष्ठिर को बताया गया था जब वे तेरह वर्ष का वनवास भोग रहे थे। श्री कृष्ण ने उन्हें बताया अनंत चतुर्दशी का व्रत करने से उन्हें उनका मान–सम्मान तथा खोया हुआ राज्य वापस मिल जायगा। अनंत चतुर्दशी के व्रत का माहत्म्य जान कर सभी

पांडवों ने द्रौपदी सहित यह व्रत निष्ठापूर्वक किया, जिसके फलस्वरूप युद्ध में उन्हें विजय प्राप्त हुई और उन्हें उनका राज्य तथा मान सम्मान फिर से प्राप्त हुआ। अनंत चतुर्दशी के दिन बांधा गया अनंत सूत्र चौदह गांठों का होता है, जिसे स्त्रियां अपने बाएं हाथ पर और पुरुष अपने दाहिने हाथ पर बांधते हैं।

अनंत चतुर्दशी की पूजन विधि :–

पूजन के लिए स्नान के पश्चात् व्रत का संकल्प लें। तत्पश्चात पूजन स्थान को शुद्ध कर वहां पर कलश स्थापना करें। कलश के ऊपर शेषशय्या पर विराजित श्री हरी विष्णु की मूर्ति रखें। मूर्ति के सम्मुख चौदह गाँठ वाला अनंत सूत्र (डोरा) रखें, और 'ॐ अनन्ताय नमः' कहकर डोरे का और अनंत भगवान का षोडशोपचार पूजन करें। पूजन के पश्चात् उस डोरे को स्त्रियां अपने बाएं हाथ में तथा पुरुष अपने दाहिने हाथ में बाँध लें तथा ब्राह्मण को नैवेद्य देकर स्वयं भी ग्रहण करना चाहिए। पूजा के बाद व्रत कथा सुननी चाहिए तथा दिनभर भगवान अनंत का ध्यान करना चाहिए।

अनंत चतुर्दशी व्रत कथा :–

पौराणिक काल में सुमंत नामक ब्राह्मण था, उसकी एक पुत्री थी सुशीला। सुशीला बड़ी ही धार्मिक और संस्कारी कन्या थी, उसकी माँ बचपन में ही मर गयी। उसकी देखभाल के लिए सुमंत ने कर्कशा नामक स्त्री से दूसरा विवाह कर लिया। किन्तु उसका व्यवहार सुशीला के लिए बिलकुल भी अच्छा नहीं था। सुशीला के बड़े होने पर उसका विवाह कौण्डिन्य ऋषि के साथ कर दिया गया, और वह दोनों ही सुमंत के घर में रहने लगे। किन्तु कर्कशा को यह पसंद नहीं आया, उसने उन दोनों को ही ताने देना शुरू कर दिया। जिस से तंग होकर एक दिन दोनों उस घर को छोड़कर वन को निकल गए। ऋषि कौण्डिन्य अत्यंत निर्धन थे, इसलिए दोनों के पास रहने के लिए कोई स्थान नहीं था। वे दोनों अत्यंत दुखी रहने लगे, कभी कभी भिक्षा न मिलने के कारण उन्हें भूखे ही सोना पड़ता था।

एक दिन रात्रि में विश्राम करते हुए सुशीला ने कुछ स्त्रियों को पूजन करते हुए देखा। वह उनके पास गयी और पुछा कि वे किसका पूजन कर रही हैं। तब स्त्रियों ने बताया कि आज अनंत चतुर्दशी है, आज के दिन व्रत करके ये अनंत धागा हाथ में बांधा जाता है। यह अनंत धागा व्रती के जीवन से दुःख मिटा देता है और घर परिवार में खुशहाली ले आता है।

यह जान सुशीला अत्यंत प्रसन्न हुई, उसने भी हाथ में अनंत सूत्र बंधवाया और हर वर्ष अनंत चतुर्दशी का व्रत करने का संकल्प लिया। धीरे धीरे ऋषि कौण्डिन्य को काम मिलने लगा, जिससे उनकी आय होने लगी। उन्होंने वन में ही एक सुन्दर आश्रम बना लिया और दोनों प्रसन्नतापूर्वक वहां रहने लगे। ऐसे ही समय बीतता गया, एक दिन सुशीला अनंत भगवान की पूजा करके वापस लौट रही थी कि तभी कौण्डिन्य ऋषि ने उसके हाथ में वो डोरा देखा और पुछा की यह हाथ में क्यों बांधा है। तब सुशीला ने उन्हें सारी बात बताई और कहा यह व्रत करने से ही हमारे घर में खुशियां आई हैं। यह सुनकर ऋषि क्रोधित हो गए, उन्हें लगा उनकी मेहनत को भगवान का आशीर्वाद बताकर उनकी पत्नी ने उनका अपमान किया है। उन्होंने वह धागा खोल कर अग्नि में फेंक दिया और कहा की भगवान ने कुछ नहीं किया जो किया मैंने किया है।

इस प्रकार उन्होंने श्री विष्णु का अपमान कर दिया, जिससे वे क्रोधित हो गए। धीरे धीरे ऋषि कौण्डिन्य की आर्थिक स्थिति फिर से खराब होने लगी, उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता था। इन सब के कारण वह फिर से दुखी रहने लगे। एक दिन उनके आश्रम में एक ऋषि पधारे, उन्होंने सुशीला से उसके दुःख का कारण पूछा तब सुशीला ने उन्हें सारी बात बता दी। ऋषि ने उन दोनों से कहा, की तुम्हारे कारण भगवान् विष्णु का अपमान हुआ है इसीलिए तुम्हारी यह दशा हुई है। तुम फिर से अनंत चतुर्दशी का व्रत करो और उन्हें प्रसन्न करो तभी तुम्हारे दुःख दूर होंगे।

दोनों ने फिर से अनंत चतुर्दशी के व्रत प्रारम्भ किये, ऋषि कौण्डिन्य अपने किये का पश्चाताप कर रहे थे। उनकी भक्ति से कुछ सालों में भगवान् विष्णु प्रसन्न हो गए। और उनके जीवन में फिर से खुशियां भर गयी।

यह कथा श्री कृष्ण ने महाराज युधिष्ठिर को सुनाई, और सभी पांडवों ने यह व्रत किया। जिसके फलस्वरूप उन्हें उनका राज पाठ वापस मिल गया।

पूर्णिमा श्राद्ध

हिंदू धर्म में अनेकों त्यौहार और संस्कार किये जाते हैं, हमारी परंपरा ने बड़ों को सम्मान देना और आपस में प्रेम करना ही सिखाया है। हिन्दू धर्म में एक बालक के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक संस्कार किये जाते हैं, किन्तु मृत्यु के बाद भी श्राद्ध ऐसे संस्कार हैं जो उनकी शांति के लिए किये जाने आवश्यक हैं। श्राद्ध भाद्रपद मास की पूर्णिमा से शुरू होते हैं और आश्विन मास की अमावस्या को पूर्ण होते हैं। इस प्रकार पूर्वजों की तृप्ति के लिए यह सोलह दिन निश्चित किये गए हैं। श्राद्ध का अर्थ है पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, संतान कभी भी अपने माता पिता का ऋण नहीं चुका सकता किन्तु श्राद्ध ही वह मार्ग है जिसके द्वारा हम अपने पितरों को संतुष्ट करते हैं। कहा जाता है कि जब तक पितरों का तर्पण नहीं दिया जाता, तब तक उन्हें मुक्ति नही मिलती और वे इसी मृत्युलोक में भटकते रहते हैं।

मान्यता है कि जो लोग अपने पितरों का तर्पण नहीं करते उन्हें पितृदोष झेलना पड़ सकता है। और यदि किसी को पहले ही पितृ दोष लग चुका है तो वह भी इससे श्राद्ध द्वारा मुक्ति पा सकता है।

क्यों है पितृ पक्ष का महत्व :–

मनुष्य देवताओं को प्रसन्न करने के लिए व्रत, दान दक्षिणा, तीर्थ भ्रमण, ब्राह्मण भोजन आदि जैसे पुण्य काम करता रहता है, फिर भी देवता प्रसन्न नहीं होते, इसका कारण क्या हो सकता है? इसका कारण या तो श्रद्धा में कमी है या फिर पितरों की अप्रसन्नता है। जी हाँ! अपने पितरों को संतुष्ट रखना अत्यंत आवश्यक है, क्योकि उनके प्रसन्न हुए बिना भगवान प्रसन्न नहीं होते। ज्योतिषी भी कहते हैं कि यदि मनुष्य को कठिन परिश्रम के बाद भी सफलता नहीं मिल रही हो तो उसका कारण पितृ दोष हो सकता है। किसी भी बड़ी पूजा में यजमान को सर्वप्रथम अपने पितरों की पूजा करनी चाहिए उसके बाद देवताओं की, ऐसा हमारे ग्रंथों में लिखा है।

कौन करता है श्राद्ध? :–

शास्त्रों के अनुसार, हर कोई श्राद्ध नहीं कर सकता, इसके लिए कुछ नियम हैं जिन्हे जानना आवश्यक है–

– पितरों और पूर्वजों का श्राद्ध करने का सर्वप्रथम अधिकार उसके ज्येष्ठ पुत्र का होता है। यदि बड़ा पुत्र श्राद्ध न कर पाए तब ऐसी स्थिति में छोटा पुत्र श्राद्ध कर सकता है।
– यदि सभी पुत्र अलग अलग परिवार में रहते हैं तब सभी पुत्रों को अपने पितरों का श्राद्ध करना चाहिए।
– यदि किसी का कोई पुत्र न हो तब उसकी विधवा स्त्री उसका श्राद्ध करवा सकती है।
– पति अपनी दिवंगत पत्नी का श्राद्ध करवा सकता है।
– पौत्र अपने दादा दादी और नाना नानी का श्राद्ध भी कर सकता है।
– यदि पौत्र भी न हो, पड़पौत्र और उनकी भी अनुपस्थिति में भाई–भतीजे अथवा उनके पुत्र भी श्राद्ध कर सकते हैं।

पितृ पक्ष में निषेध कार्य :–

पितृ पक्ष के सोलह दिन कुछ कार्य हैं जो की निषेध किये गए हैं, इन कार्यों के करने से पूर्वजों को कष्ट की प्राप्ति होती है, और उन्हें कष्ट हुआ तो वे आपके कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगे। इसलिए श्राद्ध पक्ष में इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

– इन दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
– मांस–मदिरा आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।
– श्राद्धों के समय दाढ़ी, बाल तथा नाखून आदि नहीं काटने चाहिए।
– पितृ पक्ष के दौरान चना, मसूर, सरसों का साग, जीरा, मूली, लौकी, बैगन, खीरा, काला नमक आदि नहीं

खाना चाहिए।

– ब्राह्मणो को लोहे के आसान में बैठाकर भोजन न कराएं, और न केले के पत्ते पर भोजन कराएं।

– श्राद्ध पक्ष में मांगलिक कार्य जैसे सगाई, शादी और गृह प्रवेश आदि नहीं करना चाहिए।

– इन दिनों बासी खाने से भी दूर रहना चाहिए।

यूँ तो श्राद्ध पितरों की मृत्यु की तिथि के अनुसार ही किया जाता है, अर्थात जिस तिथि पर मृत्यु हुई उसी तिथि पर श्राद्ध किया जाता है। पर विशेष परिस्थितियों के लिए विशेष दिन बने हैं, जो इस प्रकार हैं–

पूर्णिमा तिथि श्राद्ध : जिनकी मृत्यु पूर्णिमा तिथि पर हुई हो। **(24 सितंबर 2018)**

प्रतिपदा तिथि श्राद्ध : जिनकी मृत्यु प्रतिपदा तिथि में हुई हो, साथ ही नाना और नानी का श्राद्ध भी इस तिथि पर किया जा सकता है। **(25 सितंबर 2018)**

नवमी तिथि श्राद्ध : जिसकी मृत्यु नवमी तिथि पर हुई हो और नवमी तिथि का श्राद्ध स्त्रियों के लिए विशेष माना गया है। परिवार की माताओं और अन्य स्त्रियों का श्राद्ध इस दिन किया जा सकता है, इसलिए इसे मातृनवमी कहा जाता है। **(3 अक्टूबर 2018)**

द्वादशी तिथि श्राद्ध : जिनकी मृत्यु द्वादशी तिथि पर हुई हो, और साथ ही जिन्होंने मृत्यु से पूर्व सन्यास ग्रहण किया हो। **(6 अक्टूबर 2018)**

त्रयोदशी श्राद्ध : जिनकी मृत्यु त्रयोदशी तिथि को हुई हो और घर के मृत बच्चों का श्राद्ध करने के लिए भी इस दिन को शुभ माना जाता है। **(7 अक्टूबर 2018)**

चतुर्दशी तिथि श्राद्ध : इस तिथि पर केवल वह श्राद्ध किये जाते हैं, जिनकी मृत्यु हत्या, दुर्घटना अथवा आत्महत्या के कारण हुई हो। जिनकी सामान्य मृत्यु चतुर्दशी के दिन हुई है उनका श्राद्ध अमावस्या श्राद्ध तिथि पर ही किया जाता है। **(7 अक्टूबर 2018)**

अमावस्या तिथि श्राद्ध : जिनकी मृत्यु अमावस्या तिथि, पूर्णिमा और चतुर्दशी तिथि पर हुई हो तथा जिन लोगों को पितर की मृत्यु तिथि याद नहीं रहती उनका श्राद्ध भी इस दिन किया जा सकता है। इसे सर्व पितृ अमावस्या भी कहते हैं। **(8 अक्टूबर 2018)**

सितम्बर 2018 मासिक राशिफल

मेष

व्यापारी वर्ग के लिए महीना बेहद लाभकारी है। सौभाग्य आपके साथ है, लेकिन साथ ही लापरवाही आपको काफी भारी नुकसान में भी डाल सकती है। निजी संबंधों की सहायता से आय के नए स्रोत खुलेंगे। महिलाओं एवं बुजुर्गों को जोड़ों में दर्द का सामना करना पड़ सकता है। संघर्ष से ही कामयाबी मिलेगी। यकायक किसी भी निर्णय पर न पहुंचे। आपकी इस जल्दबाजी का लाभ विरोधी उठा सकते हैं। शांत रहकर अच्छे कर्म करते रहें। मासांहार और मदिरापान से परहेज बेहतर रहेगा। महीने के आखिरी सप्ताह में हालात बदलने शुरू होंगे। महीने का अंत सकारात्मकता के साथ होगा।

वृषभ

प्रेम–प्रसंग शादी तक पहुंचने के संकेत हैं। माता–पिता की बातों को पूरी तवज्जो दें वरना वे नाराज भी हो सकते हैं, लेकिन आराम से समझाने पर उनकी नाराजगी दूर हो जाएगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किसी भी नए काम को करने से पहले उसके हर पहलु पर विचार कर लें। प्रेम हवा में है इसका फायदा उठाएं। रचनात्मकता बढ़ेगी, इसका लाभ उठायें। नकारात्मक लोगों से दूर ही रहें और जल्दी किसी की भी बातों में न आएं।

मिथुन

अगर आप मेहनत करें तो, तरक्की की नयी राहें खुल सकती हैं। बदलता मौसम सेहत खराब कर सकता है, इसलिए स्वास्थ्य का ध्यान रखें। माता– पिता से अनबन होने की संभावना है। घूमने–फिरने जाने से पहले घर की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करें। मनोरंजन पर अधिक धन खर्च करने से माहांत में आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। कई समय से आप अपने पार्टनर के साथ घूमने का प्लान कर रहे हैं, इस माह यह प्लान पूरा होता हुआ नजर आ रहा है।

कर्क

इस महीने आपको संभलकर रहने की जरूरत है। सेहत का खास ख्याल रखने की जरूरत है। अपनी खानेपीने की

आदतों पर काबू रखें। याद रखिये दोस्तों के बिना कामयाबी मिल पाना आसान नहीं, इसलिए उनसे अच्छे संबंध बनाए रखें। देव आराधना करें, इस से न केवल आपका मन शांत होगा, बल्कि आने वाले कष्ट भी परेशान नहीं करेंगे। लोगो पर विश्वास करना सीखें और अपनी बनाई हुई योजनाओं को पूरा करने की ओर कदम बढ़ाइए।

सिंह

कामयाबी को बनाए रखने के लिए आलस्य का त्याग जरूरी है। वैवाहिक जीवन में नीरसता घर कर रही है, जीवनसाथी की शिकायतों को दरकिनार न करें। रिश्ते में आ रही दरारों को समय रहते कम कीजिये। शत्रु आपके गैरजिम्मेदाराना रवैये का लाभ उठा सकते हैं। आर्थिक मोर्चे पर भी हालात सामान्य ही रहेंगे। मन में नकारात्मकता को न आने दें, और नए उत्साह के साथ अपने काम पर लग जाएँ।

कन्या

यह महीना आपके आने वाले जीवन की दिशा निर्धारित करने वाला है। सोच–समझकर फैसला लेना ही बेहतर रहेगा। नया व्यवसाय शुरू करने में मित्रों की सहायता लेने से फायदा होगा। स्त्रियों के लिए समय बहुत अच्छा है। संतान सुख प्राप्ति के योग हैं। किसी प्रियजन से भेंट हो सकती है, जो आपको बहुत खुशी देगी और आपका उत्साह बढ़ाएगी।

तुला

यह महीना आपके लिए मोटे तौर पर ठीक–ठाक रहेगा। व्यापार में नये आइडिया से फायदा होगा। भावुक होना अच्छा है, लेकिन अधिक भावुकता से बचें। सुख और धन लाभ के संकेत। जोडों के दर्द की शल्य चिकित्सा हो सकती है नौकरी व्यवसाय मे परिवर्तन के चलते घर से दूर रहना पड सकता है। व्यापारियों के लिए माह उत्तम रहेगा और विद्यार्थी वर्ग के लिए भी पढाई में मन लगाने का अच्छा अवसर है।

वृश्चिक

जीवन में कुछ अचंभित करने वाली घटनाएं होंगी। ऐसे वक्त में दोस्त आपके बहुत काम आएंगे। विद्यार्थी वर्ग को अपनी पढ़ाई के लिए काफी मेहनत करने की जरूरत होगी। कानूनी पचड़े भी परेशान कर सकते हैं। प्रॉपर्टी में निवेश करने से बचें। महिलाओं को इधर की बात उधर करने से बचना होगा, अन्यथा किसी मुसीबत में पड़ सकती हैं। कन्याओं को शादी के लिए अच्छे रिश्ते आने की सम्भावना है।

धनु

आप अपनी संतान को लेकर काफी समय से परेशान चल रहे हैं, इस माह उस समस्या का अंत होगा। भविष्य में होने वाले मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे। कानूनी अड़चनों का समाधान होगा। राजनीतिक संबंधों का लाभ हो सकता है। जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग आपको प्राप्त होगा, परिवार में प्रेम बढ़ेगा जो आपको एक नए जोश से भर देगा।

मकर

विद्यार्थियों को अच्छी खबर सुनने को मिल सकती है। लोहे के व्यवसायियों को अतिरिक्त लाभ हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के वेतन में इजाफा तो होगा, लेकिन बढ़ती महंगाई से हिसाब बराबर हो जाएगा। संतान पक्ष के साथ कुछ निजी वक्त बिताने का मौका मिलेगा। भाई या बहन की ओर से कोई शुभ समाचार आपका इंतजार कर रहा है।

कुम्भ

आप चिंता में रहेंगे। शत्रु पक्ष आप पर हावी हो सकता है। भौतिक साधनों में व्यर्थ का धन खर्च होने की उम्मीद है। याद रखें क्रोध सबसे पहले अपना नुकसान करता है, इसलिए गुस्से पर काबू रखना जरूरी है। वैवाहिक जीवन में संदेह घातक साबित हो सकता है। बेहतर रहेगा कि आप अपने जीवनसाथी से इस पर बात कर के विवाद का हल निकालें।

मीन

समाज में आपका यश बढ़ेगा और करिअर में प्रगति होगी। भाग्य आपका साथ देगा। हालाँकि आर्थिक तौर पर उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही घरेलू और पारिवारिक मोर्चे पर भी परेशानियों से दो–चार होना पड़ सकता है। परिवार के सदस्यों के साथ किसी भी विवाद में पड़ने से बचें।

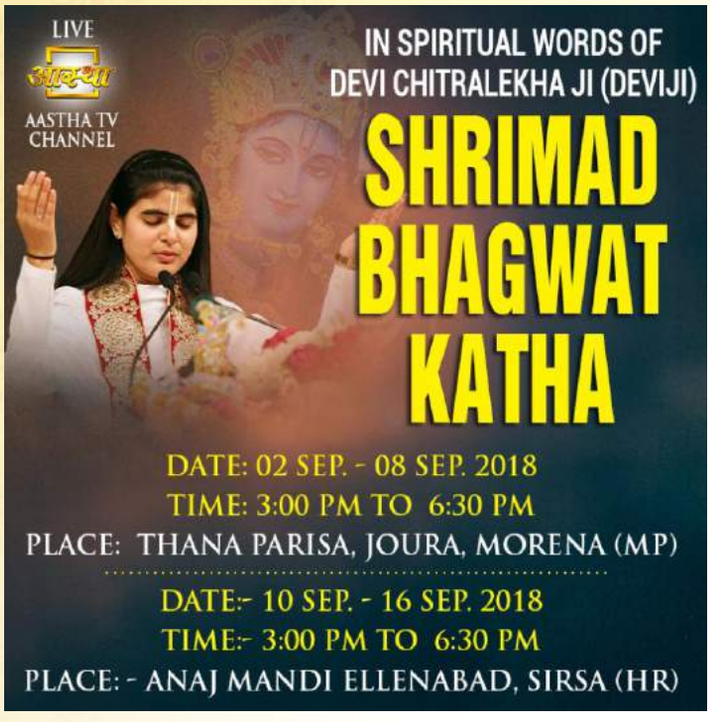

दुनिया में रहने की सबसे अच्छी दो जगह है, या तो किसी के दिल में या किसी की दुआओं में ।

गणेश चतुर्थी
॥ भक्ति दर्शन ॥
भक्ति का महासंगम
भक्ति दर्शन
DOWNLOAD THE BHAKTI DARSHAN APP.
ENJOY 5K+ VIDEO AND AUDIO BHAJANS, AARTIS, BHAGWAT KATHA,
DEVOTIONAL QUOTES, DEVOTIONAL WALLPAPERS AND MORE.